:- उपसंहार :-

* उप संहार *

हिन्दी साहित्य के इतिहास में राकेशजी का नाम सुवर्ण अक्षरों में लिखा गया है। राकेशजी ने अपने जीवन में अनेक संकटों का सामना करते हुए निरंतर जिन्दगी जीने का प्रयास किया। उसमें वे सफल भी रहे है। जिसने से सम्बन्धीत यथार्थ घटनाओं को उन्होने अपने साहित्य में स्थान दिया है। उनका साहित्य एक भोगे हुए जिवन का आईना है।

"मोहन राकेश की कहानियों में चित्रित महानगरीय जीवन" यह लघु - शोध प्रबन्ध पाँच चार अध्यायों में विभक्त हैं। प्रथम अध्याय के अंतर्गत मोहन राकेशजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विचार किया है। जिसमें अनेक तथ्यों को सामने लाने का प्रयास किया हैं। इसके अंतर्गत जन्म, बाल्यावस्था, माता, पिता, शिक्षा, दिक्षा, स्वभाव आदि को विस्तृत रूप से अध्ययन किया है तो कृतित्व में उनके समस्त साहित्य को उजागर करने का प्रयास किया है। इन्होंने हिन्दी साहित्य को, कहानी नाटक, उपन्यास, निबंध, डायरियाँ, और जीवनी आदियों का महत्वपूर्ण योगदान दिया। खास कर वे नाटकों और कहानियों के कारण ही अमर हो गये। राकेशजी ने हिन्दी साहित्य को जो योगदान दिया है उसके लिए हिन्दी साहित्य उनका हमेशा ऋणी रहेगा।

द्वितीय अध्याय में " महानगरीय जीवन के स्वरूप " को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। सांस्कृतिक पक्ष, राजनीतिक

पक्ष, आर्थिक पक्ष, भौगोलिक पक्ष, पारिवारिक पक्ष, और सामाजिक पक्ष आदि के स्पष्टीकरण से महानगरीय जीवन के स्वरूप का चित्र हमारे सामने लाने का प्रयत्न किया है। महानगरीय जीवन के स्वरूप को देखने से पहले, महानगर किसे कहा जाता है यह व्याख्या के द्वारा स्पष्ट कर दिया है - "महानगर शब्द अंग्रेजी के मेट्रोपोलिस का पर्यायवाची है। "मेट्रोपोलिटिन" शब्द की उत्पत्ति ग्रीक साहित्य के मेट्रोपोलिस शब्द से हुई है। ग्रीक साहित्य से इन शब्दों का अर्थ क्रमशः "माता" एवं "नगर" है। अतः ग्रीक साहित्य में "मेट्रोपोलिस" का अर्थ "मातृनगर" समझा जाता था। लेकिन आज महानगर का चित्र कुछ और है।

महानगरीय जीवन के स्वरूप में सांस्कृतिक पक्ष तीन वर्गों में बँटा हुआ नजर आता है। पहला वर्ग उच्च वर्ग का है। यह महानगर में ऊँची - ऊँची इमारतों में रहता है। इस वर्ग के जीवन का हर सुख मौजूद है साथ ही यह वर्ग कला और कलाकार दोनों को पनाह देता है। उच्च वर्ग की संस्कृति क्लब, पार्टियाँ आदि होती हैं। इस वर्ग पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

दूसरा वर्ग मध्यवर्ग का है इसके अंतर्गत तीन वर्ग हैं जो उच्च मध्य मर्ग और निम्नमध्य वर्ग के होते है । उच्च मध्य वर्ग में अफसर, सफल उद्योगपति एवं व्यापारी आते हैं तो मध्यवर्ग में दफ्तरों मे काम करनेवाले छोटे आफसर, बुध्दीजीवी और मध्यम दर्जे के व्यापारी आते हैं। निम्न मध्य वर्ग में प्रायः चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी आते हैं। इस वर्ग में हर रोज छोटे - मोटे धन्दो से ताजा कमाई करनेवाले, फेरीवाले आदि भी आते हैं।

तीसरा वर्ग निम्न का है। यह वर्ग फैक्टरी में काम करता हुआ प्रतीत होता है। जिन्हे दो वक्त की रोटी भी नहीं प्राप्त होती। यह वर्ग कल कारखानों रेलवे लाईनों के पास अपना गुजारा करते हैं।

राजनीतिक पक्ष के अंतर्गत राजनीति धर्म और जाति के नाम पर कैसे अवलम्बीत होती है यह देखाने का प्रयास किया है। नेता लोग अपनी नेतागिरी दिखाने के लिए मजदूर, विद्यार्थी, अध्यापक आदियों को अपनी मांगों के लिए खड़ा करके अपना स्वार्थ साध लेते हैं।

महानगर के आर्थिक पक्ष के कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हुई दृष्टिगत होती हैं इसमें रोजी - रोटी की समस्या, मकान की समस्या, भीड़ में अपना आर्थिक अस्तीत्व के कारण छटपटाता व्यक्ति और, दफ्तरों में अपने आपको खपाकर अर्थ की समस्या को दूर करते हुए आदमी को इस पक्ष में प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन से हमें आर्थिक पक्ष का बोध प्राप्त हुआ है।

धार्मिक पक्ष का महानगर में उपहास किया जाता है। महानगर में हर व्यक्ति के पिछे कोई न कोई जिम्मेदारी होती है। अपनी जिम्मेदारी को पार करने के लिए वह दिन - रात व्यस्त रहता है। इसी व्यस्तता के कारण धार्मिक अनुष्ठानों और कर्मकाण्डों के लिए उसके पास समय नहीं रहता। साथ ही वह धर्म को अन्धविश्वास समझता है। महानगर में उत्पन्न भय को धर्म पनाह देता है। महानगर का वासी अपने जीवन में संतुलन बनाये रखने के लिए मन्दिर, आर्य समाज, गुरुद्वार तथा अन्य धर्म स्थलों की स्थापना करता है। महानगर में

आज धर्म स्थलों का दुरुपयोग होने लगा है। धर्म के नामपर अनगिनत धन्दे पनप रहे हैं। आधुनिक काल में धर्म में राजनीति प्रवेश कर चुकी है।

भौगोलिक पक्ष के अंतर्गत महानगरों की रेल्वे लाईनें, कल कारखाने, फैक्टरी, कूड़ा करकट आदि गंधयुक्त वातावरण के साथ - साथ बहुमंजिला इमारतें बड़ी-बड़ी कोलियाँ भिड़ को लाने ले जानेवाली रेल गाड़ियाँ, चौड़ी सड़के, पाँच सितारा होटलें साथही मुहल्लें भी होते हैं। जिनमें कोई सुविधा नजर नही आती। इन्ही मुहल्लों में किचड़, गंदगी और कुडे के ढ़ेर नजर आते हैं। इसी भौगोलिक वातावरण से वहाँ का जीवन हमें गंदगी युक्त नजर आता है।

महानगरीय जीवन का पारिवारिक पक्ष हमें भयानक लगता है। ग्रामों की तुलना में महानगरीय परिवार के अनेक टुकडे हो रहे नजर आते है। इसके अनेक कारण है एक ग्रामों की तरह महानगरों मे बड़े - बड़े मकान नही मिलते, परिवार में उत्पन्न व्यक्तिवाद, भोगवाद, स्वार्थ, स्वतंत्रा रहने की प्रवृत्ती, उच्छृंखलता आदि अनेक कारणों से आज महानगरीय परिवार संयुक्त बन रहे हैं। महानगरों में पति - पत्नी के बीच वैवाहिक जीवन टूटता हुआ नजर आता है। इन दोनों के बीच समरसता के अभाव के कारण तालमेल नहीं रहा। आज के आधुनिक युग में पत्नी पति से ज्यादह पढ़ी-लिखी होने के कारण अहंवादी बन पड़ी है। परिणामत: वह पति से जुड़कर नही रहना चाहती। इसी अहं के कारण महानगरीय परिवार टूट रहे हैं।

आज महानगरों मे सामाजिक जीवन -हास होता हुआ नजर आता है। महानगरों में रहनेवाला हर व्यक्ति समाज से सम्बन्ध नही रखना चाहता। रोजमर्रा की जिन्दगी साथही घड़ी के उपर उसकी दैनंदिनी रहने के कारण उसे किसी की तरफ देखने को भी वक्त नहीं। वह अपनी पैरोतले की जमिन देखकर चलता है। आज महानगर का आदमी रुपयों के जरिए सब कुछ हासिल करना चाहता है। उसे आदमी के आपसी सम्बन्धों से कोई दिलचस्पी नही। महानगरीय जीवन औद्योगिक क्रांति के कारण यंत्रावत बना हुआ है जिसके कारण किसी की ओर देखने की भी फुर्सत नही।

तृतीय अध्याय में राकेशजी की कहानियों में चित्रित महानगरीय जीवन का परिचय कराया गया है। राकेशजी ने महानगरीय जीवन से सम्बन्धीत कुल ६६ कहानियों में से १५/२० कहानियाँ ही मिलती हैं। इन १५/२० कहानियों में उन्होने सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक जीवन से सम्बन्धीत कहानियाँ लिखी हैं।

सामाजिक जीवन से सम्बन्धीत कहानियों में "जख्म," "आखिरी सामान", "एक घटना", "मिस पाल", "पाँचवे माले का फ्लैट", "मवाली", "शिकार", "गुनाह बेलज्जत", "रोजगार", और "सोया हुआ शहर" आदि कहानियाँ आती है। जिसमें राकेशजी ने अकेलापन, औपचारिकता, निर्वैयक्तिकता, यांत्रिकता, गतिशीलता, प्रतिस्पर्धात्मकता आदि को प्रस्तुत करके महानगरीय जीवन के सामाजिक पक्ष को हमारे सम्मुख रखा हैं। उन्होने सामाजिक जीवन को भोगा था। इसी भोगे हुए जीवन को उन्होने अपनी

कहानियों में चित्रण किया।

अर्थ के कारण उत्पन्न कठिनाईयों को लेकर राकेशजी ने कयी कहानियाँ लिखी। महानगर से सम्बन्धीत कहानियों में राकेशजी ने इसका चित्रण किया हैं। इन्होने अनेक कहानियों में अर्थ के कारण तनाव और अनिश्चित विषमताओं का विस्तृत वर्णन किया हैं। आपने अर्थ के कारण विघटित दोहरी जिन्दगी को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। "आर्द्रा" कहानी में "बिन्नी" आर्थिक स्थिति के कारण घुटन की जिन्दगी व्यतीत कर रहा है। "क्वार्टर" में "शंकर" स्कूल का टिचर होते हुए भी घर के खर्च के कारण तालमेल नहीं बिठा पाता। ताल मेल बिठाने के लिए वह कर्ज की बोझ से दबता जाता है। "पाँचवे माले का फ्लैट" कहानी में "अविनाश" एक बेकार युवक है, जिसे अपना जेब खर्च चलाने के लिए दुसरों से रुपया उधार में लेना पड़ता हैं। साथ ही "फटा हुआ जुता" में भी राय को बम्बई जैसे महानगर में नोकरी नहीं मिलती। पहेलियाँ भरकर वह अपनी आर्थिक कठिनाईयों दूर करना पड़ता हैं। राय जैसा आदमी अर्थ के कारण अकेला रह गया है। " एक घटना " में तो राकेशजी ने एक रिटायर डाक्टर की मृत्यु के बाद उत्पन्न आर्थिक कठिनाईयों का सामना उसका परिवार कैसे कर रहा है इसका हृदयस्पर्शी यथार्थ चित्रण हुआ हैं। "मि. भाटिया" एक बेकार आदमी है जो अपने अनेक मनसुबे लेकर जिन्दगी की गाड़ी ढो रहा है। "खाली" कहानी में जुगला अपने आपको दफ्तर के कुण्ठाग्रस्त वातावरण में खपा लेता है। साथ ही पैसों के कारण मजबूर हो-कर अनैतिक व्यापार के लिए प्रवृत्त लड़कियों को " गुनाह बेलज्जत", "सोया हुआ शहर ",

और " रोजगार" आदि कहानियों में चित्रित हैं।

राकेशजी महानगर के पारिवारिक जीवन के चित्रण में भी पिछे नही रहे। उन्होने " एक और जिन्दगी", "क्वार्टर", और "आर्द्रा" आदि कहानियों में पारिवारिक व्यक्तिवाद को दिखाया हैं। तो "आखिरी सामान" और "गुनाह बेलज्जत" कहानियों में स्वार्थ के कारण परिवार का विघटन होता हुआ दृष्टिगत होता है। "पहचान" और "फौलाद का आकाश" कहानियों में भोग के कारण बिखरा हुआ परिवार चित्रित हैं। पति - पत्नी के आपसी सम्बन्धो में निर्वैयक्तिकता का दर्शन "खाली" कहानी में मिलता है।

चतुर्थ अध्याय में राकेशजी की कहानियों की विशेषताओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया हैं। शिर्षक, कथानक, चरित्र, संवाद, वातावरण, भाषा-शैली और उद्देश्य आदि तत्वों के द्वारा कहानियों की विशेषताओं का समग्र अध्ययन किया हैं।

आपने अपनी कहानियों के शिर्षक का चुनाव परम्परागत पध्दति पर किया हैं। किन्तु अधिकतर शिर्षक नवीन धरातल पर आधारित है। जैसे " मिस पाल", " मि. भाटिया","क्वार्टर", आदि कहानियों के शिर्षक परम्परागत है। साथही "खाली", "एक और जिन्दगी","सोया हुआ शहर","जानवर और जानवर", "भूखो", "अपरिचित","पहचान","परमात्मा का कुत्ता", और "एक ठहरा हुआ चाकू" आदि कहानियों के शिर्षक सांकेतिक एवं व्यंजनात्मक हैं।

राकेशजीने अपनी क हानियों के लिए मध्यवर्ग से सम्बन्धित

कथानक का चयन किया है। अपवादात्मक "सेफ्टी पिन" ऐसी कहानी उच्चवर्ग से सम्बन्धीत है। राकेशजी ने जीवन के सभी क्षेत्रों से कथानक को उठाया हैं। इनकी कुछ कहानियों के कथानक के सूत्र चरम सीमा पर जाकर स्पष्ट होते है। ऐसी कहानियों के प्रारंभ में कोई कथानक स्पष्ट नहीं होता। इसमें "मन्दी" "पांचवे माले का फ्लैट " आदि कहानियाँ आती हैं। इनकी कहानियों के कथानक में प्राय: व्यंजना का कौशल दृष्टिगत होता है। कुछ कहानियों के कथानक ऐसे हैं जिसमें कहानी का प्रारंभ होता है साथही कयी कहानियों का कथानक पहले ही समाप्त हो जाता हैं। "सेफ्टी पिन" और "जख्म" आदि कहानियाँ आती हैं। इनकी सभी कहानियों में से पचास प्रतिशत कहानियाँ प्रेमचंद परम्परा की हैं। ऐसी कहानियों में "मलबे का मालिक", "परमात्मा का कुत्ता," "उसकी रोटी", "गुनाह बेलज्जत","सुहागिने", "एक और जिन्दगी", "अपरिचित" आदि आती हैं।

मोहन राकेशजी ने अपनी कहानियों में जिन्दगी से थके हारे, ऊबे, निराशा, अकेलेपन और जिवन की विसंगतियों को झेलते हुए, टूटते बिखरते हुए पात्रों को लिए हैं। सभी चरित्र उनकी निजी अनुभुतियों का ही प्रसाद हैं। उनके सभी चरित्र तनाव और अंतर्विरोधों में जीनेवाले हैं। ऐसे पात्रों के चारित्र विश्लेषण में कहीं अभिधा, इतिवृत्त, सांकेतिकता और कहीं स्थितियों के संदर्भ से काम लिया हैं।

राकेशजी के संवाद पात्रों की मुद्राओं और स्थितियों की व्यंजना के साथ - साथ उनके कार्य व्यापारों तक का संकेत देते हैं। संक्षिप्त कथोपकथन की दृष्टि से " रोजगार", "बस स्टैण्ड की एक रात", और " मिट्टी के रंग" आदि कहानियों में देखने मिलते हैं।

उन्होने कम शब्दों में संवाद प्रस्तुत किया हैं। कयी स्थानों पर एक या दो शब्दों में पूरी बात कह दी गयी हैं। "रोजगार" कहानी में संवाद काफी प्रभावी जान पड़े है। इन्होने संवादों में लाक्षणिक और व्यंजनात्मक शब्दावली का प्रयोग किया हैं। ऐसे संवादों की भाषा सरल शब्दों से निर्मित हैं। इनमें सांकेतिकता, प्रतिकात्मकता और लाक्षणिकता का गुण मिलता हैं।

राकेशजी की कहानियों में चित्रित वातावरण ग्रामिण, नगरीय, यात्रा-संस्थान, उच्चवर्गीय, निम्नमध्य वर्गीय, सरकारी, गैरसरकारी, शिक्षा संस्थान और त्रासद जीवन से लिया हैं। इनकी कहानियों में आया वातावरण मन को बाँध लेता हैं। साथही पाठक के मन में एक गहरा बोध जगाता है।

भाषा शैली लेकर राकेशजी की भाषा का अध्ययन करे तो उनकी भाषा में प्रयुक्त शब्द तीन स्तरों के हैं - [१] साहित्यिक, [२] जनभाषा और, [३] देशी-विदेशी शब्दावली के योग से बनी भाषा के स्तर को अपनी कहानियों में स्थान दिया हैं जिसमें वे काफी सफलता पा चुके हैं।

कहानियों को लिखाने के पिछे राकेशजी के अनेक उद्देश्य रहे हैं इनमें सामाजिक सत्य को हमारे सम्मुख प्रस्तुत करना यह एक प्रमुख उद्देश्य रहा है। साथही "मलबे का मालिक" कहानी लिखाने का उद्देश्य अमानवियता का चित्रण करना, आदि अनेक उद्देशों को लेकर इन्होने अपनी कहानियोंको हमारे सम्मुख रखा हैं। इसमें वे काफी सफल भी हुए है।

****

-: संदर्भ ग्रंथ सूची :-

-: संदर्भ ग्रंथ सूची :-

अ. क्र.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशन	संस्करण
१]	सहाय्यक ग्रंथ -			
	~~अम्बिका~~ राकेश अनिता	मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ	राजपाल एण्ड सन्स	१९
२]	समिक्षात्मक ग्रंथ -			
१]	डॉ. अग्रवाल सुषमा	कहानीकार मोहन राकेश.	पंचशील, जयपुर.	प्रथम १९७९
२]	डॉ. अंसल कुसुमपुरी	आधुनिक उपन्यासों में महानगर	अभिव्यंजना दिल्ली	प्रथम १९९३
३]	डॉ. अश्क उपेंद्रनाथ	हिन्दी कहानी एक अंतरंग परिचय	निलाभ, इलाहाबाद	प्रथम १९६७
४]	डॉ. गुप्ता नीलम	हिन्दी कहानी और रचना सिध्दान्त	प्रतिमान, नयी दिल्ली	-
५]	कमलेश्वर	मेरा हमदम मेरा दोस्त	राजपाल, नयी दिल्ली	तृतीय १९७४
६] ४	डॉ. मिश्र सरजू प्रसाद	हिन्दी कहानी के आधारस्तंभ	अजब पुस्तकालय, कोल्हापुर	प्रथम सितंबर १९७५
७]	डॉ. पिंपलापुरे मिना	मोहन राकेश का नारी संसार	प्रकाशन संस्था नयी दिल्ली	प्रथम १९८७
८]	राकेश अनीता	चंद सतरें और	राधाकृष्ण नयी दिल्ली	प्रथम १९९३
९]	राकेश मोहन	आईने के सामने	सम्पादित	१९६५

१०]	डॉ. शर्मा घनानंद "जदली"	मोहन राकेश का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	शान्ति, रोहतक	प्रथम १९९०
११]	डॉ. सक्सेना द्वारिकाप्रसाद	हिन्दी के प्रतिनिधि कहानीकार	विनोद, पुस्तक मंदीर, आग्रा	प्रथम १९८५/८६
१२]	डॉ. वार्ष्णेय लक्ष्मीसागर	आधुनिक कहानी का परिपार्श्व	-	प्रथम १९६६
१३]	डॉ. वार्ष्णेय लक्ष्मीसागर	द्वितीय महायुध्दोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	१९८२

पत्रा - पत्रिकाएँ

१]	अणिमा	२३ दिसंबर, १९७२
२]	कृष्णचंदर	मासिक मार्च, १९७३